'समय की शिला पर' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए ।

4. 'ओ गंगा बहती हो क्यूँ' के शीर्षक की सार्थकता और प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'शैलेन्द्र ज़िन्दगी के जीत में यकीन' रखने वाले गीतकार थे'- इस कथन के संदर्भ में 'किसी की मुकुराहटों पे हो निसार' गीत के उद्देश्य को स्पष्ट करें।

5. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अनुगूँज है- युक्तियुक्त उत्तर दीजिए । (15)

अथवा

गीतिकाव्य के तत्वों के आधार पर 'हमारी सभ्यता : अतीत खण्ड' की समीक्षा की समीक्षा कीजिए।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए: (7+7)

(क) गीतितत्व

(ख) 'बीन भी हूँ मैं रागिनी भी हूँ' का शिल्प

(ग) 'इस पार उस पार' में अभिव्यक्त जीवन

(घ) 'उत्तर प्रियदर्शी' की भाषा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4967 **J**

Unique Paper Code : 2054000022

Name of the Paper : Hindi Geetikavya (GE)

Name of the Course : **Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (8+8)

(क) लरि वैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी ।
करि कलह बुलाई जवन सैन पुनि भारी ।।
तिन नासी बुधि बल विद्या धन बहु वारी ।
छाई अब आलस कुमति कलह अंधियारी ।।

भए अंध पंगु सब दीन हीन ।

हा! हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई ।।

अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी ।

पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख्वारि ।।

अथवा

भूमि के विस्तार में बेशक कमी आई नहीं है

आदमी का आजकल आकाश छोटा हो गया है ।

हो गए सम्बन्ध सीमित डाक से आए ख़तों तक

और सीमाएँ सिकुड़कर आ गई घर की छतों तक

प्यार करने का तरीका तो वही युग-युग पुराना

आज लेकिन व्यक्ति का विश्वास छोटा हो गया है ।

(ख) नींद थी मेरी अचल निस्पन्द कण कण में,

प्रथम जागृति थी जगत के प्रथम स्पन्दन में,

प्रलय में मेरा पता पदचिन्ह जीवन में,

शाप हूँ जो बन गया वरदान बन्धन में,

कूल भी हूँ कूलहीन प्रवाहिनी भी हूँ!

नयन में जिसके जलद वह तुषित चातक हूँ,

शलभ जिसके प्राण में वह ठिठुर दीपक हूँ,

फूल को उर में छिपाये विकल बुलबुल हूँ,

अथवा

पासे सभी उलट गए दुश्मन की चाल के

अक्षर सभी पलट गए भारत के भाल के

मंज़िल पे आया मुल्क हर बला को टाल के

सदियों के बाद फिर उड़े बादल गुलाल के

हम लाए हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के

इस देश को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के

तुम ही भविष्य हो मेरे भारत विशाल के

इस देश को रखना मेरे बच्चों सम्भाल के

2. गीतिकाव्य की विविध शैलियों पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

'हिन्दी गीतिकाव्य की समृद्ध परंपरा रही है'- इस कथन की समीक्षा कीजिए ।

3. 'हिमालय' में अभिव्यक्त सांस्कृतिक बोध पर विचार कीजिए । (15)

अथवा